॥श्री॥

महाकवि भासविरचितम्

स्वप्नवासवदत्तम्

प्रथमोङ्कः

(नान्द्यन्ते ततः प्रविशति सुत्रधारः)

सूत्रधारः-

उदयनवेन्दुसवर्णावासवदत्ताबलौ बलस्य त्वाम् ।

पद्मावतीर्णपूर्णौ वसन्तकम्नौ भुजौ पाताम् ॥१॥

अन्वय- उदय-नवेन्दु-सवर्णौ, आसव-दत्ताबलौ, पद्मावतीर्णपूर्णौ, वसन्तकम्नौ, बलस्य भुजौ त्वाम् पाताम् ॥१॥

अनुवाद- उदित हुए**(उदय)** नवीन चन्द्रमा**(नवेन्दु)** के समान वर्ण वाली**(सवर्णौ)**, मदिरापान**(आसव)** से विशेष बलशाली**(दत्ताबलौ)**, श्री एवं उत्तम लक्षणों से युक्त**(पद्मावतीर्पूर्णौ)**, वसन्त ऋतु**(वसन्त)** के समान कमनीय**(कम्नौ)**, बलराम की भुजाएँ आपकी रक्षा करें**(पाताम्)** ॥१॥

प्रस्तुत श्लोक आशीर्वादात्मक मंगलाचरण के रूप में है । प्रस्तुत श्लोक से कथावस्तु के पात्रों का भी परिचय दिया हुआ है जिससे यह वस्तुनिर्देशात्मक नान्दी भी है ।

नान्दी- नन्दन्ति देवता यस्यां तस्मान्नान्दीति कीर्तिता।

ग्रंथ की निर्विघ्न समाप्ति के लिये देव, द्विज, नृपादि को प्रसन्न करने के लिये नान्दी का पाठ होता है। नाटक के प्रारम्भ में इसका प्रयोग होता है। यह तीन प्रकार की होती है- स्तुत्यात्मक, आशीर्वादात्मक और वस्तुनिर्देशात्मक।

सूत्रधार- सूत्रं धारयति, इति सूत्रधारः।

रंगमंच पर अभिनीत की जाने वाली सभी घटनाओं को नियन्त्रित करने वाले को सूत्रधार कहा जाता है। वर्तमान समय में इसे Director कहा जाता है। जो कि नाटक की प्रस्तावना में स्वयं उपस्थित होकर नाटक का आरम्भ करता है तथा सभी पात्रों को निर्देश प्रदान करता है। अतः सूत्र को धारण करने के कारण ही इसे सूत्रधार कहते हैं।

नेपथ्य- नेपथ्यं स्यात् जवनिका रंगभूमिः प्रसाधनम्।

अभिनेताओं के अभिनय करने के लिये वेषपरिवर्तन हेतु स्थान 'नेपथ्य' कहलाता है। जो जवनिका अर्थात् पर्दे के पीछे होता है। आजकल इसको Green House भी कहते हैं।

भृत्यै र्मगधराजस्य स्निग्धैः कन्यानुगामिभिः।

धृष्टमुत्सार्यते सर्वस्तपोवन गतो जनः॥२॥

अन्वय- मगधराजस्य कन्यानुगामिभिः, स्निग्धैः, भृत्यैः तपोवनगतः सर्वः जनः धृष्टम् उत्सार्यते ॥२॥

अनुवाद- मगधराज की कन्या का अनुगमन करने वाले, स्नेही सेवकों द्वारा, तपोवन में स्थित सभी लोगों को अशिष्टतापूर्वक हटाया जा रहा है ॥२॥

विशेष रूप से यहां पर सेवकों का व्यवहार ज्ञात हो रहा है साथ ही अपने राज्य और राजा के प्रति(राजा की पुत्री- पद्मावती) स्नेही स्वभाव भी विदित हो रहा है। रानी पद्मावती का आश्रम में प्रवेश करना आश्रम के प्रति स्नेह को प्रस्तुत कर रहा है।